मण्डी-हि.प्र.। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुखू को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपा।

कानपुर-कोयला नगर(उ.प्र.)। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना, विधानसभा प्रमुख सचिव प्रदीप दुबे, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. अर्चना तथा अन्य।

आमेट-राज.। नए भवन के शिलान्यास भूमि पूजन कार्यक्रम में उपस्थित रहे भाजपा पार्षद रमन कंसारा, राजस्थान सबज़ोन निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. पूनम दीदी, ब्र.कु. रीटा, ब्र.कु. पूनम, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गौरी तथा अन्य।

नरवाना-हरियाणा। त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डीएसपी अमित भाटिया, भाजपा युवा मोर्चा के प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य कर्ण प्रताप, अनाज मंडी प्रधान एडवोकेट राजेश, जींद सबज़ोन प्रभारी ब्र.कु. विजय दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा बहन, ब्र.कु. सुषमा,उचाना, ब्र.कु. विजय तथा अन्य।

पांडव भवन-करोल बाग(दिल्ली)। केंद्रीय भण्डारण निगम,सीडब्ल्यूसी के क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित 'हैप्पीनेस' सेमिनार के पश्चात् समूह चित्र में एचओडी फाइनेंस कविता कथूरिया, एडमिन और एचआर आरती जी, ब्र.कु रेनू, ब्र.कु. अनुषा, ब्र.कु. कपिल तथा कंपनी के अन्य सदस्य।

हाथरस-आनन्दपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। जल संरक्षण जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन कमल पब्लिक स्कूल में किया गया। कार्यक्रम के पश्चात् जल संरक्षण की शपथ लेते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शान्ता बहन, ब्र.कु. वन्दना, स्कूल के शिक्षक एवं शिक्षिकाएं।

साइलेंस... एक पॉवरफुल मेडिसिन

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

विदेही बनना माना स्वमान का स्वरूप होना

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि जो एकदम ऐसे न्यारे हो जायें धीरे-धीरे सारी रेस्पॉन्सिबिलिटी को भी हमने निभाकर उसको भी पूरा कर सम्पन्न कर दिया। किसी को नाराज़ भी नहीं किया। सम्पूर्ण खिला हुआ रहे। अपनी खुशबू भी फैलाई। लेकिन सम्पूर्ण खिल करके सारी पत्तियों को झड़ करके बीच का जो बुर रह गया माना अशरीरी हो गया। तो ये स्वीट साइलेंस है।

उसके बाद है डीप साइलेंस। और डीप साइलेंस किसको कहेंगे? डीप साइलेंस का मतलब है गहराई में खो जाना, समा जाना। बाहर की दुनिया से एकदम अपने आप मन और बुद्धि को ले जाना है विदेही स्थिति में। अब यहाँ पर एक बात ये भी समझनी है कि विदेही और अशरीरी में क्या अंतर है? है कोई अंतर? या खाली शब्दों का ही अंतर है? क्या कहेंगे? विदेही और अशरीरी दोनों एक ही हैं या अलग हैं? देखो राजा जनक जो था ना विदेही था, अशरीरी नहीं था। इसीलिए बाबा कई बार कहते हैं विदेही बनना है। राजा जनक की तरह एक सेकंड में विदेही स्थिति में स्थित हो जाना। कहा जाता है कि रामायण में एक बात आती है, जब सीता जी जंगल में जा रही थी वनवास मिला तो उस वक्त उसके मायके से मैसेज आया सीता जी के लिए और मैसेज में उसके पिता ने यही कहा कि तुम वन में जा रही हो चौदह साल के लिए तो विदेही बनकर रहना। इसलिए विदेही बनकर रही वो, इसलिए रावण उसको स्पर्श नहीं कर सका। कहने का भावार्थ विदेही स्थिति में कोई भी बुराई हमें स्पर्श नहीं कर सकती। और हम मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्थिति में सहज आ सकते हैं इसलिए विदेही स्थिति के लिए प्रतिदिन आपको एक सुबह-सुबह स्वमान दिया जाता है किसलिए? विदेही बनने के लिए। तो विदेही बनना माना स्वमान का स्वरूप होना। स्वमान के स्वरूप होकर उसकी गहराई में जाना। जो कहा ना डीप साइलेंस। ऐसा स्वरूप बनकर उसकी गहराई में समा जायें और उसका वास्तविक अनुभव करते जायें उसको कहा विदेही। ये स्वमान कोई जपने के लिए थोड़ी दिया है कि रोज़ स्वमान अगर मैं ले लूं तो उसका सारा दिन जाप करती रहूँ, जाप नहीं करना है लेकिन उसका स्वरूप बनना है।

जैसे शुरू-शुरू में दादियां सुनाती थीं कि बाबा ने हम बच्चों को चौदह साल की तपस्या कराई तो उसमें भी बाबा ने स्वमान दिया था। और स्वमान क्या दिया था 'मैं चतुर्भुज हूँ' अर्थात् दो हाथ नर के और दो हाथ नारी के। कोई भी कार्य के लिए ये नहीं कहना कि ये तो मैं नहीं कर सकती हूँ क्योंकि मैं नारी हूँ। चतुर्भुज माना दोनों ही। हमने भी अल्टरनेट क्या किया है, मेल का बॉडी भी लिया है और फीमेल का बॉडी भी लिया है। तो दोनों संस्कार हैं ना हमारे अन्दर? तो बाबा ने ये स्वमान देकर दोनों संस्कारों को इस तरह से जागृत किया कि निर्भय बना दिया सब बच्चों को। ऐसा निर्भय थे कि वो डरते नहीं थे। रात का पहरा देती थी बहनें। ट्रक चलाती थी। निर्मल शांता दादी ने बताया कि मैकेनिक का काम करते थे। बड़े-बड़े टॉप में छोटे-छोटे बच्चे अन्दर घुस कर साफ करते थे। क्यों? क्योंकि ये नहीं कहे कोई बच्चा कि मैं ये काम नहीं कर सकता हूँ।

इस तरह से जीवन में रहते हुए जिसको कहा जाये ना आत्मनिर्भर। किसी के ऊपर भी आधारित न हो। ये हो तो ही काम हो, ये न हो तो काम न हो। नहीं। हम चतुरर्भुज हैं। और जितनी बार वो स्वमान को हम अन्दर में याद भी करते हैं उतनी बार हम उस संस्कार को जागृत करते हैं। और इस तरह से बाबा ने जब कहा कि स्वमान की माला दी है तो इस तरह से रोज़ स्वमान लेकर उसके स्वरूप बनो। -क्रमशः

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के पांचवें पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में शान्तिवन के डायमण्ड हॉल में आयोजित रक्तदान शिविर का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, ब्र.कु. हंसा बहन, संस्था के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करूणा व राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिड्ढा, तिरुपति बालाजी मंदिर के सीईओ वीर ब्रह्म, मेडिकल विंग के सचिव ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल, ब्र.कु. डॉ. सतीश गुप्ता, आबू रोड ट्रोमा सेंटर के ब्लड बैंक प्रभारी ब्र.कु. धर्मेंद्र, 200 से अधिक बार रक्तदान करने वाले भूपेन्द्र दवे,गुजरात तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें। कार्यक्रम में आबू रोड सहित देश के विभिन्न हिस्सों से आए 381 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया।

दिल्ली-पीतमपुरा। तनाव मुक्ति एवं नशा मुक्ति पर आयोजित कार्यक्रम में स्कूल के टीचर्स और प्रिंसिपल के साथ ब्र.कु. पीयूष,लोधी रोड एवं अनीता जी।

बिहार-राजगीर। आध्यात्मिक कार्यक्रम में विधायक कौशल किशोर को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

मैनपुरी-उ.प्र.। जिलाधिकारी अजंनी कुमार सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अवन्ती। साथ हैं मुख्य विकास अधिकारी नेहा बंधु।

अलीगढ़-रघुवीरपुरी(उ.प्र.)। राजयोगिनी दादी जानकी के पांचवें पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए आरएसएस दयानंद चित्राल, पुजारी वयोवृद्ध हास्य प्रेम किशोर पटाखा। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता।